

॥ गोविन्दाष्टकं स्वामिब्रह्मानन्दकृतम् ॥

.. govindAShTakam by Swami Brahmananda ..

sanskritdocuments.org

July 25, 2016

---

# Document Information

---

Text title : govindAShTakam svAmibrahmAnandakRitam

File name : govindAShTakambrahmAnanda.itx

Category : aShTaka

Location : doc\_vishhnu

Language : Sanskrit

Subject : philosophy/hinduism/religion

Transliterated by : Malleswara Rao Yellapragada malleswararaoy at yahoo.com

Proofread by : Malleswara Rao Yellapragada and Proofread by ksr ramachandran ramachandran\_ksr at yahoo.ca

Description-comments : BrihatstotraratnAkara

Latest update : November 24, 2012

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : <http://sanskritdocuments.org>

॥ गोविन्दाष्टकं स्वामिब्रह्मानन्दकृतम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

चिदानन्दाकारं श्रुतिसरससारं समरसं  
निराधाराधारं भवजलधिपारं परगुणम् ।  
रमाग्रीवाहारं ब्रजवनविहारं हरनुतं  
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ १ ॥

महाम्भोदिस्थानं स्थिरचरनिदानं दिविजपं  
सुधाधारापानं विहगपतियानं यमरतम् ।  
मनोज्ञं सुज्ञानं मुनिजननिधानं ध्रुवपदम्  
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ २ ॥

धिया धीरैर्धैर्यं श्रवणपुटपेयं यतिवरैः  
महावाक्वैज्ञेयं त्रिभुवनविधेयं विधिपरम् ।  
मनोमानामेयं सपदि हृदि नेयं नवतनुं  
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ ३ ॥

महामायाजालं विमलवनमालं मलहरं  
सुबालं गोपालं निहतशिशुपालं शशिमुखम् ।  
कलातीतं कालं गतिहतमरालं मुररिपुं  
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ ४ ॥

नभोबिम्बस्फीतं निगमगणगीतं समगतिं  
सुरौघे सम्प्रीतं दितिजविपरीतं पुरिशयम् ।  
गिरां पन्थातीतं स्वदितनवनीतं नयकरं  
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ ५ ॥

परेशं पद्मेशं शिवकमलजेशम् शिवकरं  
द्विजेशं देवेशं तनुकुटिलकेशं कलिहरम् ।  
खगेशं नागेशं निखिलभुवनेशं नगधरं  
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ ६ ॥

रमाकान्तं कान्तं भवभयलयान्तं भवसुखं  
दुराशान्तं शान्तं निखिलहृदि भान्तं भुवनपम् ।  
विवादान्तं दान्तं दनुजनिचयान्तं सुचरितं  
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ ७ ॥

जगज्येष्ठं श्रेष्ठं सुरपतिकनिष्ठं क्रतुपतिं  
बलिष्ठं भूयिष्ठं त्रिभुवनवरिष्ठं वरवहम् ।  
स्वनिष्ठं धार्मिष्ठं गुरुगुणगरिष्ठं गुरुवरं

सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ ८ ॥

गदापाणैरेतद्दुरितदलनं दुःखशमनं  
विशुद्धात्मा स्तोत्रं पठति मनुजो यस्तु सततम् ।  
स भुक्त्वा भोगौघं चिरमिह ततोऽपास्तवृजिनो  
वरं विष्णोः स्थानं व्रजति खलु वैकुण्ठभुवनम् ॥  
॥ इति श्री परमहंस स्वामि ब्रह्मानन्द विरचितं  
श्री गोविन्दाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

<:रु>

Encoded and proofread by YV Malleswara Rao malleswararao@yahoo.com  
Proofread by ksr ramachandran ramachandran\_ksr at yahoo.ca

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

---

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

---

.. govindAShTakam by Swami Brahmananda ..  
was typeset on July 25, 2016

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

